मौजे-ज़िन्दगी

सीताराम महर्षि



भगवती जैन स्मृति-ग्रंथ माला : अष्टम पुष्प

प्रकाशक : प्रज्ञा प्रकाशन
कृष्ण-कुटीर, रतनगढ 331022 (राज)

प्रथम संस्करण, सन् 2000

मूल्य : सत्तर रुपये

आवरण : अडिग

मुद्रक : सांखला प्रिण्टर्स, सुगन निवास
चन्दन सागर, बीकानेर 334001

नम्र निवेदन

बन्धुवर सज्जन जैन के विशेष आग्रह पर 29 अक्टूबर से 5 दिसम्बर, 1998 तक गुवाहाटी में रहना हुआ। इसी अवधि मे इस पुस्तक के अधिकांश शे'र लिखे गये। इसका निमित्त बना सज्जन। वह जीवन को उन्नत बनाने के सम्बन्ध में प्रश्न करता रहता था। अपने व्यापार मे अत्यधिक व्यस्त रहने के बावजूद वह आध्यात्मिक क्षेत्र में भी सक्रिय है। वह जीवन को इस तरह संतुलित रखना चाहता है कि आर्थिक क्षेत्र मे भी प्रगति होती रहे तथा आध्यात्मिक दृष्टि से भी पूर्णता प्राप्त हो।

सज्जन के विभिन्न प्रश्नो के उत्तर मे ही इन शे'रो का सृजन हुआ। पुस्तक मे कुछ शे'र देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति से भी सम्बन्धित हैं। कुछ शे'र अपनी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'नज़र औ' नज़ारे' से भी लिये गये है। इसका कारण रहा अपने प्रिय पाठकों का आग्रह। 'नज़र औ' नज़ारे' में प्रकाशित ये शे'र हमारी सामाजिक एव मानसिक स्थिति का समुचित विश्लेषण करते है।

ये शे'र अत्यन्त सरल भाषा मे है। मेरी मान्यता है कि प्रत्येक पाठक को रचना का रसास्वादन प्राप्त हो। जहाँ एक ओर साहित्यिक रुचि के व्यक्ति इनसे आनन्द प्राप्त कर सके, वहीं दूसरी ओर सामान्य स्तर के पाठकों को भी इसका लाभ मिले।

जैसा कि मै पहले ही निवेदन कर चुका हूँ, सज्जन के प्रश्नो के उत्तर में ही अधिकाश शे'र लिखे गये है, अतः इनकी संरचना भी उसी रूप में हुई है। सज्जन ने इन्हे अपने प्रश्नो के समाधान के रूप मे बहुत पसन्द किया। उसकी इच्छा हुई कि इनका शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशन हो ताकि अन्य लोगो को भी इसका लाभ मिल सके। लाभ कितना मिलेगा, नहीं कहा जा सकता, किन्तु इसमे संदेह नहीं कि इनसे प्रायः सभी पाठको की अनेकानेक शंकाओ का निवारण हो सकेगा।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था 'शिवप्रसाद मोहनलाल चेरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा हुई है। ट्रस्ट के सभी ट्रस्टियो के प्रति आभार एवं मगलकामना प्रकट करता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशन से पूर्व बन्धुवर किशोर कल्पनाकात से इन शे'रो के सम्बन्ध मे विस्तृत चर्चा हुई। सौभाग्य से उन्हे भी ये बहुत अच्छे लगे। उनका भी आग्रह रहा कि इनका प्रकाशन होना चाहिए। किशोरभाई के प्रति उनके परामर्श के लिए आभार।

मुद्रण कार्य मे पूर्ण सहयोग के लिए साखला प्रिण्टर्स के संचालक सम्माननीय बन्धु श्री दीपचन्दजी साखला को हार्दिक धन्यवाद।

श्री जगदीश रथयात्रा, सन् 2000 सीताराम महर्षि

अभिन्न हृदय सज्जन जैन
को
सस्नेह

मौजे-ज़िन्दगी

: 1 :

रात कितनी ही भले हो स्याह आखिर मे उसे,
मात खानी ही पड़ेगी रोशनी के हाथ से।

: 2 :

उस जहाँ मे कौन है कुछ कह न पाऊंगा कभी,
इस जहाँ में आदमी से है बड़ा कुछ भी नहीं।

: 3 :

यह कभी हँसना, कभी रोना नहीं है ज़िन्दगी,
हर हाल में ही मौज, तेरे मौज, तेरे मौज हो।

: 4 :

हो यही कोशिश बनें इंसाफ की ऐसी मशाल,
रास्ता इन्सानियत का जो सदा रौशन करे।

: 5 :

हो भले मिलना-बिछुड़ना, हो भले कैसी घड़ी,
चेहरे पर हर समय मुसकान होनी चाहिए।

: 6 :

है इसे दरिया में रहना हो भले अंजाम कुछ,
खाक में कश्ती को चलते है नहीं देखा कभी।

: 7 :

साथ है जो आज कल भी साथ होंगे सोच मत,
कौनसा पल गुल खिलादे क्या नहीं कुछ भी पता।

: 8 :

साथ जिनके है गुजारे चद पल करके दुआ,
भूल से भी बद्दुआ उनके लिए निकले नहीं।

: 9 :

दूसरो के दाग हरदम खोजने चौकस रहे,
खुद के दामन पर कभी डालें नहीं अपनी नज़र।

: 10 :

जो भले थे कल बुरे गर आज हैं लगने लगे,
खोट उनमे या कि अपनी ही नज़र मे आ गया।

: 11 :

सोच मे है फर्क गर तो बात है यह फक्र की,
गर दिलों मे फर्क तो है बात चिन्ता की बहुत।

: 12 :

साथ हो तो प्यार से ही, प्यार से ही हों जुदा,
ज़िन्दगी मे प्यार का दामन न छूटे हाथ से।

: 13 :

गर अधेरे मे हुई है रोशनी तब्दील दोस्त,
रोशनी मे यह अँधेरा फिर यहाँ तब्दील होगा।

: 14 :

गीत साहिल कश्तियों के हैं सदा गाते रहे,
बाजुओ को जिनके ताकत का रहा अपनी गुमां।

: 15 :

वो न मज़िल की ख़ुशी से हो सकेंगे रूबरू,
देख तेवर रास्ते के खौफ खा जाते है रूक।

: 16 :

देखकर सूरत किसी की कुछ पता चलता नहीं,
देख सीरत खुद-ब-खुद हर राज खुलता जायगा।

: 17 :

ख्वाहिशें पूरी हुई होतीं जो सब इंसान की,
कौन किसकी कद्र करता, कौन किसको पूछता?

: 18 :

ख्वाब कितना ही हसीं हो टूट जाता है अगर,
देखने में फिर कहाँ आता करे कितने जतन।

: 19 :

जो चलेंगे पा ही लेंगे अपनी मंजिल एक दिन,
हो भले वह दो कदम पर या कि सौ कदमों के बाद।

: 20 :

एक दिन तो है बिछुडना साथ कितने ही रहे,
मिल गले हँसते हुए बिछुड़ें करें ऐसा जतन।

: 21 :

रास्ते में लोग मिलते औ' बिछुड़ते जायेंगे,
था अकेला जब चला, होगा अकेला पहुँचकर!

: 22 :

छू न पाते दिल को आये ग़म भले आये खुशी,
जिन्दगी की हर अदा से हो गये वाकिफ हैं जो।

: 23 :

होता है जो अच्छा होता मालिक की रज़ा पीछे उसके,
मकसद है हँसाने का कोई, मकसद है रुलाने का भी तो।

: 24 :

वो न तेरे साथ जिनका कुछ दिनों के ही लिए,
साथ रहता जिन्दगी भर है वही तेरा, समझ!

: 25 :

जिस शमां ने रोशनी दी रात भर जलकर,
याद रख अहसान उसका हर उजाले में!

: 26 :

साथ में सामान ले रहने का कब आये यहाँ,
कुछ नहीं ले जा सकेंगे जब यहाँ से जायेंगे।

: 27 :

आरजू ऐ मेहरबां! कर मेहरबानी यही,
हर नजारा सीख लूं तेरी नजर से देखना।

: 28 :

है लिया अपना बना तो महर कर इतनी,
नजर मे रखना, नजर से दूर मत होना।

: 29 :

आ गया जिसकी समझ मे खेल यह तेरा,
हर नजारे को मगन हो देखता है वो।

: 30 :

जिन्दगी का काम तुमसे दूर करना है,
मौत का है काम तेरे पास ले जाना!

: 31 :

जी भले कैसे मगर कुछ इस तरह से जी,
हर जुबां पर नाम तेरा प्यार से आये।

: 32 :

मानकर अपना तुम्हें हर हाल में खुश हूँ,
सोचते क्या तुम कभी चिन्ता नहीं करता।

: 33 :

चैन पाने जिस नजर को प्यार की रहती तलाश,
देखती सीरत, नहीं वह देखती सूरत कभी।

: 34 :

चांदनी की राह में पलकें बिछाते जो रहेंगे,
वे अँधेरों से कभी नज़रें चुका सकते नहीं।

: 35 :

कश्तियां भी हैं डुबाती दिन अगर होते बुरे,
तिनका साहिल से मिला दे गर मुकद्दर साथ हो।

: 36 :

चाहते रुख हो हवा का नित हमारी ही तरफ,
देखकर रुख हम चले मंजूर होता है नहीं।

: 37 :

ज़िन्दगी तेरी अँधेरो से न घबराये कभी,
बन शमां उनके लिए जो डर रहे इनसे बहुत।

: 38 :

है अगर पहचान दुनिया से तो पाया कुछ नहीं,
हो गयी पहचान खुद से तो सभी कुछ पा लिया।

: 39 :

वह कैसा खुशनुमां माहौल होगा तय करेंगे हम,
कि हमको किस तरह जीना कि हमको किस तरह मरना।

: 40 :

नहीं थे वे बुरे हम भी भले इंसान थे लेकिन,
हमारा सोच था कुछ और, उनके ख्वाब थे कुछ और।

: 41 :

जमाने को बदलना है भले वह आज बदले कल,
कभी तो सोच रहबर क्या तुम्हारा हाल तब होगा!

: 42 :

मुहब्बत थी बड़ी हम मे रहे हम एक जां होकर,
लड़ाया है हमें रहबर तुम्हारे बद इरादों ने।

: 43 :

सियासत के उसूलों को समझते है नहीं फिर भी,
न सोचो हैं नहीं वाकिफ तुम्हारे बदइरादों से।

: 44 :

भले मजहब की हो बाते, भले हो कौम के मसले,
तुम्हारे सोच से रहबर तबाही का बना आलम।

: 45 :

की दिल में नफरतें पैदा, बढ़ाया फासला हम में,
किया है गर्क बेड़ा मुल्क का इन रहनुमाओं ने।

: 46 :

लिए थे ख्वाब कितने मुल्क में आयेगी खुशहाली,
मगर अब हर तरफ वीरानियों के देखते मंजर।

: 47 :

न रोटी दो, न कपड़ा दो, न छत दो सर छुपाने को,
हमें बस चैन से रहने का अवसर रहनुमा दे दो।

: 48 :

थामकर जो चल रहे हैं आदमीयत की मशाल,
अलगरज वे हैं फरिश्ते चूमता हूँ नक्शे-पां।

: 49 :

थे मसीहा कौम के खातिर हुए कुर्बान जो,
गूंजते किस्से रहेंगे शोरे-महशर को दवा।

: 50 :

अंदलीबो चहचहाना है गुजरता नागवार,
आ रहा सय्याद लेकर हाथ में अपने कफस।

: 51 :

कब तलक गुलशन बचेगा होगया है हाल यह,
बढ रही नफरत गुलो-गुल्चीं के देखो दरमियान।

: 52 :

लोग मिलते जो सभी हैं नफरतो से मुज्तरिब,
लफ्ज दो उनको मुहब्बत के बड़ा देंगे शकून।

: 53 :

हिक्मते-अमली की बातें हम न समझेंगे कभी,
है नहीं सीखा सबक हमने मुहब्बत के सिवा।

: 54 :

इस तरह गाफिल हुए हैं आज रहबर मुल्क के,
कान में पड़ती नहीं हर्फे-शिकायत कौम की।

: 55 :

हर तरफ है बेबसी, हैं अश्क, हैं दुश्वारियां,
कौम का यह हाल कैसे हो गया रहबर बता?

: 56 :

कब तलक करता रहेगा इस तरह आदाब-सोज़,
क्या खुदी की भूल से भी याद तक आती नहीं।

: 57 :

न अब वो रात आयेगी, न वे जल्वे कभी होंगे,
मिलेंगे चर्चे होंगे अब फकत गुज़रे फसानों के।

: 58 :

चले थे किस मुकां खातिर हैं पहुँचे किस मुकां आकर,
नहीं चलने पे बस था, था नहीं पहुँचे जहाँ आखिर।

: 59 :

न जीना हाथ में अपने, नहीं है मौत पर काबू,
करें हम उसकी क्यों चिन्ता जहाँ कुछ कर नहीं सकते।

: 60 :

अकेले हों तो है मस्ती, किसी के साथ भी मस्ती,
इनायत हो गयी रब की हमेशा मौज रहती है।

: 61 :

न होंगे एक दिन हम और तुम भी दोस्त चल दोगे,
भला फिर बीच में अपने कभी भी दुश्मनी क्यों हो?

: 62 :

कभी है नाम आ जाता जुबां पर गैर का गम मे,
मगर दिल पर सदा चस्पां तेरी तस्वीर रहती है।

: 63 :

तुम्हारे रूप का मुझ पर हुआ है इस कदर जादू,
कि हर हालात में तेरा मुझे दीदार होता है।

: 64 :

सभी से प्यार है मुझको, नहीं है दूसरा कोई,
जिधर देखू उधर तेरा करिश्मां नजर आता है।

: 65 :

रहम उन पर सदा मालिक रहे जो बेखबर तुझसे,
अगर वे जान लेते इस कदर जाहिल नहीं होते।

: 66 :

जिधर देखू उधर तू ही दिखायी दे रहा हरदम,
सिवा तेरे नहीं कुछ भी हुआ वाकिफ बना तेरा।

: 67 :

मुझे हर वक्त तेरी याद रहने का सबब क्या है?
बहुत सोचा तो आखिर जान पाया-महरबां मुझ पर।

: 68 :

जिस नजर से देखता है जिन्दगी अपनी,
उस नजर से दूसरो की देखना ले सीख।

: 69 :

खूबसूरत है चमन गर है इनायत वक्त की,
फिर गयी जो नजर तो वीरानियां रह जायेंगी।

: 70 :

या रहेगी दिल में दुनिया या रहेगी मौज,
साथ दोनो रह सके है यह नहीं मुमकिन।

: 71 :

गीत से जो है तुझे इतनी मुहब्बत दोस्त,
गीत जाये ज़िन्दगी बन कर जतन ऐसा सदा।

: 72 :

और कुछ देना न देना सिर्फ इतनी आरजू,
गीत होठों पर रहे, चेहरे पे हो हरदम हँसी।

: 73 :

मुहब्बत के चंद फूल, चंद नफरतों के शूल,
मंजिल पे पहुँचा पास में पूंजी थी बस यही।

: 74 :

महफिल वही है साज औ' आवाज भी वही,
क्या बात है कि दिल नहीं लगता है अब यहाँ।

: 75 :

बैठकर महफिल मे मेरा हाल होता है बुरा,
लोग कहते बैठने को दिल करे मजबूर-चल!

: 76 :

ईट खींच नींव की चिल्ला रहे हैं लोग,-
चिन्ता हमको खा रही कैसे बचे मका!

: 77 :

खून इन्सां ने बहाया जब कभी जुनून मे,
शर्म से इन्सानियत का सर उसी पल झुक गया।

: 78 :

प्यार है धागा सभी है धर्म मनकों की तरह,
गूंथ वह माला कि जिसको देखकर दिल खिल उठे।

: 79 :

ठोकरे खाकर अभी तक होश गर आया नहीं,
आजमाकर इस जहाँ को और थोड़ा देख ले।

: 80 :

इश्क की गलियों में जाकर लोग लाखों खो गये,
आ गये जो लौटकर वे इश्क के मारे न थे।

: 81 :

चार दिन ही जो रुलाकर छोड़ दे क्या इश्क है,
जो रुलाये ज़िन्दगी भर इश्क ऐसा चाहिए।

: 82 :

फैलती जब इश्क की खुशबू गजब होता यहाँ,
इश्क मीरा ने किया दुनिया दीवानी हो गयी।

83 :

पूछ मत मुझसे कि मैने इश्क किस-किस से किया,
है बता जो कौन मेरे इश्क के काबिल नहीं?

: 84 :

देखकर दुनिया खुदा से एक ही मेरा सवाल,-
क्या यही सब कुछ दिखाने था मुझे भेजा यहाँ?

. 85 :

नफरतो के इस धुएँ से सांस मेरी घुट रही,
सोचता हूँ—इस जहाँ मे काश! मैं आता नहीं।

: 86 :

डाकिये ने जो दिया खत ठीक है उसका पता,
जो लिखा मजमून मेरी समझ में आता नहीं।

: 87 :

आदमी ने जो तरक्की की सुनो उसका हिसाब,
दो कदम आगे तो पीछे सौ कदम धरता रहा।

: 88 :

लोग इस बस्ती के रहते मेल से है इस तरह,
शोर जब-जब भी उठा तो बंद दरवाजे हुए।

: 89 :

प्यार से भर बांथ मे मिल लो लगा मुझको गले,
आज मेरा रास्ता है हो रहा तुमसे जुदा।

: 90 :

जान पाया बहुत कम अपने मुतल्लिक मैं, मगर,
लोग कहते हैं—तुम्हे हम जानते अच्छी तरह।

: 91 :

दोस्त ऐसे भी मिले इस राह में चलते हुए,
छोड़कर जो साथ शिकवे हर जगह करने लगे।

: 92 :

रोज अपना सर झुकाकर मांगता बस यह दुआ,—
भूल से भी इस जुबां से बद्दुआ निकले नहीं।

: 93 :

सामने करते प्रशंसा, पीठ पर निन्दा करें,
है सुना मैंने कि यह इस गाँव का दस्तूर है।

: 94 :

जब तलक था साथ उनके आदमी था काम का,
साथ छोड़ा और मै बिलकुल निकम्मा हो गया।

: 95 :

गरज मिटते ही मिले तो यूँ कहा अनजान बन,
लग रहा ऐसा कि शायद है कहीं देखा तुम्हें।

: 96 :

यूँ बुलावा भेज दोगे यह कभी सोचा न था,
है बहुत सामान कैसे बॉधकर इसको चलूँ।

: 97 :

क्या हुआ उससे हमारी जो सदा अनबन रही,
ढूँढने पर भी न मिल पायेगा वैसा आदमी।

: 98 :

दिल दिया कैसा अनोखा कुछ पता चलता नहीं,
है सुबह को इस तरफ तो शाम को है उस तरफ।

: 99 :

कुछ नहीं मैं जानता पर जानता इतना जरूर,
लोग ज्यादातर यहाँ हैं वहम के मारे हुए।

: 100 :

जिन्दगी भर एक ही रट हैं लगाते हम यहाँ पर,
काश! यह होता यहाँ पर, हाय! यह होता नहीं।

: 101 :

पूछते क्या हाल, जो था कल वही है आज भी,
कब फकीरों के हुई तबदीलियां हालात में?

: 102 :

सुन रहा था यह अभी तक आदमी बनते फरिश्ते,
देख आया अब फरिश्ते आदमी बनने लगे है।

: 103 :

क्या जमाना था कि मिलते आदमी चारो तरफ,
ढूँढने पर अब कहीं मुश्किल से मिलता आदमी।

: 104 :

की अगर बचने की कोशिश लोग कहते हैं मुझे,
जब तुझे बचना ही था क्यों आगया इस भीड मे?

: 105 :

है यही मेरी तमन्ना और है ख्वाहिश यही,
जब मरु हर हाल ही मे आदमी बनकर मरूँ।

· 106 :

रोककर मुझको सुनाता जब भी मिलता वह फकीर,
बह रहा दरिया का पानी देख आँखे खोलकर।

. 107 :

दिन बिताया मौज मे हँसते हुए, गाते हुए,
चैन से गर रात भी गुजरे तो सब कुछ ठीक है।

: 108 :

एक मिटता और दूजा पाल लेते हैं उसी क्षण,
भ्रम नहीं होता तो दुनिया चल न पाती चार दिन।

: 109 :

कल कफस मे बंद होकर बहुत ही था छटपटाया,
वह पखेरू आज नगमा झूम करके गा रहा था।

: 110 :

चंद लमहों के लिए ही देखने मेला गये जो,
बात क्या है, लौटने का नाम ही लेते नहीं हैं?

: 111 :

प्यार भी करते बहुत, नफ़रत भी करते है बहुत,
बेखबर इनसे चलाचल रोज मंजिल की तरफ।

: 112 :

ज़िन्दगी का हर कदम रख इस तरह प्यारे,
रोशनी का दायरा कुछ और बढ जाये।

: 113 :

बात बनती है दिलों के मेल से,
अर्ज़ या ऑसू बना सकते नहीं।

: 114 :

होगये बेहोश अपनी चाह में,
होश मे फिर वे कभी आये नहीं।

: 115 :

हैं कभी लेते, चुकाते हैं कभी,
कर्ज़ का यह खेल चलता रात-दिन।

: 116 :

कौन है अपना, पराया कौन है,
वक्त देता है सदा इसका जवाब।

: 117 :

दे रहे थे कल बिना मांगे हुए,
मागने पर आज देते हैं नहीं।

: 118 :

अब जमेगा रंग, आयेगा मजा,
साथ होंगे आज जब महफिल में हम।

: 119 :

सुन रहे हैं गीत महफिल मे सभी,
समझनेवाले यहाँ दो चार ही।

: 120 :

रास्ते में गंदगी होगी जरूर,
कदम रखता चल जरा बचते हुए।

: 121 :

दर्द तो पैदा करेगी ही चुभन,
फिर भले तासीर उसकी हो जुदा।

: 122 :

जो न उलझी इस जहाँ के रूप में,
नजर थी वह बहुत ही सुलझी हुई।

: 123 :

है अँधेरा बहुत आंगन में अभी,
कल सुबह फिर धूप चमकेगी यहाँ।

: 124 :

याद कर लेता अगर अपना सबक,
मौलवी से इस कदर डरता नहीं।

: 125 :

थे मुकर्रर जो हिफाजत के लिए,
लूट उनके ही इशारे पर हुई।

: 126 :

कल जिसे पत्थर समझकर गालियॉं दी,
रो रहा था आज उसको सर झुकाकर।

: 127 :

इस कदर हैं लोग जकडे बेडियो मे,
छूटने की बात सुन रोने लगे है।

: 128 :

जब मिला वह यार ऑसू आ गये,
सूख सब ऑसू गये जब वह गया।

: 129 :

यार के आते ही हलचल मच गयी,
यार के जाते ही सब कुछ सोगया।

: 130 :

पास तेरे रह स्वयं के पास रहता हूँ,
दूर तुझसे हो स्वयं से दूर हो जाता।

: 131 :

सब्र रखकर बैठता महफिल में गर कुछ और,
यार से मिलने का मौका मिल गया होता।

: 132 :

यार ने घर ही बनाया इस कदर है,
दूरियां सबके घरो की है बराबर।

: 133 :

समझ सकता कौन मेरे यार की दरियादिली,
था नहीं काबिल वही सब दे दिया दिल खोलकर।

: 134 :

क्या हुआ हम पर नजर जो यार की पड़ती नहीं,
फक्र है बैठे हुए है यार की महफिल मे हम।

: 135 :

रास्ते मे लोग गिनती के मिले,
है जिन्हे मालूम मंजिल का पता!

: 136 :

लौटती खाली नहीं कोई पुकार,
पर, इरादा नेक होना चाहिए।

: 137 :

मागना तो मांग हरदम तू यही,
जिन्दगी को प्यार की खुशबू मिले।

: 138 :

समझ लेता आँसुओं का राज जो,
बात नफरत की कभी करता नहीं।

: 139 :

दायरों में बाध मत खुदको कभी,
देख दुनिया को सदा आज़ाद रह।

: 140 :

हूँ भले पत्थर तुम्हारे वास्ते,
मैं किसी के वास्ते भगवान् हूँ।

: 141 :

आदमी मोती सभी है आब वाले,
हर नज़र ही पारखी होती नहीं है।

: 142 :

राह पर चलना तुम्हारे हाथ में,
पहुँचना मंजिल पे वश मे है नहीं।

: 143 :

रास्ते में जब कभी ठोकर लगे,
सोचना गम्भीर हो उसका सबब।

: 144 :

छोड़ ऐसे देखना चारों तरफ,
पास तेरे है तुझे जो चाहिए।

: 145 :

चेहरा दर्पण में खुद का देखकर,
फिर नज़र दुनिया के चेहरे पर टिका।

: 146 :

जिन्दगी को इस तरह जीकर दिखा,
हर नज़र को रोशनी मिलती रहे।

: 147 :

नज़र में गर प्यार का कोई नजारा,
रास्ते में रुक नहीं सकते कदम।

: 148 :

गर मिले नफरत कभी कर याद तू,
चेहरा तुझसे मुहब्बत जो करे।

: 149 :

साथ हम कब तक रहेंगे सोच मत,
किस तरह रहते यही है सोचना।

: 150 :

बन हमारे हाथ में जो फूल रखते हैं,
थाम लेते बन पराये पत्थरों को भी।

: 151 :

ज़िन्दगी में जब कभी हो कशमकश,
कदम तब इन्साफ के हक में रहे।

: 152 :

जो तेरा बूता किये जा लगन से,
गम न कर जिस पर तेरा काबू नहीं।

: 153 :

साथ दे इंसाफ मे वह दोस्त है,
जो बने दीवार उसको छोड़ दे।

: 154 :

यह सफर तय हो सदा ही इस तरह,
उस सफर मे चेहरे पर नूर हो।

: 155 :

बस, वही आवाज़ सुनना जो तुझे,
हर कदम पर रोशनी देती रहे।

: 156 :

खुशनुमां करने स्वयं की ज़िन्दगी,
काम आयेगी तेरी ज़िन्दादिली।

: 157 :

ज़िन्दगी की राह है फिसलन भरी,
सँभलकर रखना पड़ेगा हर कदम।

: 158 :

जब घटाएँ घोर काली हैं डराती,
बिजलियों तब भी दिखातीं रास्ता।

: 159 :

रास्ते गर हैं जुदा तो क्या हुआ,
एक मंजिल पर पहुँचते है सभी।

: 160 :

दूर कैसे हो सकेंगे वे भला,
दिल में जिनकी याद धड़कन बन रहे।

· 161 :

है भले इंसान की पहचान यह,
बोल होठो पर मुहब्बत के रहे।

: 162 :

सीख लेता जो मुहब्बत का सबक,
हर घड़ी जन्नत का लेता है मज़ा।

: 163 :

गर मुहब्बत का सबक सीखा नहीं,
हो भले कुछ, है नहीं वह आदमी।

: 164 :

हो भले तकरीर या तदबीर हो,
हो मुहब्बत का लिए पैगाम वह।

: 165 :

आदमी से आदमी की दोस्ती,
ज़िन्दगी भर के लिए निभ जायगी।

: 166 :

ज़िन्दगी भर कौन तेरा साथ देगा,
साथ देना है तुझे अपना सदा।

: 167 :

साथ दुनिया के बितायी ज़िन्दगी,
अब स्वयं के साथ रहना सीखले।

: 168 :

चैन दुनिया ने किसी को कब दिया?
पा सके हैं जो स्वयं से पा सके।

: 169 :

दूसरों को जो सुनाने है चला,
सुन लिया है क्या उसे खुद गौर से।

: 170 :

बदल सकता गर नहीं दुनिया, बदल
खुद को, जीने का मजा आ जायगा।

: 171 :

हाथ मत फैला किसी के सामने,
पास तेरे है तुझे जो चाहिए।

: 172 :

दे न पायी है जो दुनिया आज तक,
दे सकेगी फिर कभी यह सोच मत।

: 173 :

गैर से उम्मीद जब तक है तुझे,
गम से छुटकारा नहीं मिल पायगा।

: 174 :

पाँव उनके ही यहाँ पूजे गये,
पीठ दे संसार को चलते रहे।

: 175 :

चाहता गम में किसी का साथ गर,
दूसरो के गम लगाता चल गले।

: 176 :

देखकर बेहोश जिनको हो रहा,
होश आने पर न आयेगे नजर।

: 177 :

मिल सभी से पर जरा दूरी से मिल,
जिन्दगी भर साथ यह निभ जायगा।

: 178 :

ज्ञान मंज़िल का नहीं काफी, अगर
कदम पाने के लिए चलते नहीं।

: 179 :

रास्ते मे है रुकावट कुछ नहीं,
बुजदिली तेरी रुकावट है बनी।

: 180 :

इस मुकां पे पहुँच कर हिम्मत न हार,
दो कदम ही दूर मंजिल रह गयी।

: 181 :

हर कदम पर यूँ न मुड़कर देख पीछे,
इस तरह मंजिल नहीं मिलती कभी।

: 182 :

जो गया उसको भुलाकर देख आगे,
गुनगुनाने फिर लगेगी जिन्दगी।

: 183 :

हाथ छूटे गर किसी का गम न कर,
थामने तैयार कोई हाथ है।

: 184 :

मांगना उनकी खुशी की नित दुआ,
है चला तू साथ जिनके दो कदम।

: 185 :

छोड़कर घर जो सुबह है जा रहे,
लौटकर फिर शाम को आ जायेगे।

: 186 :

खूबसूरत हो कहानी जिन्दगी की,
एक दिन की हो भले हो सौ दिनों की।

: 187 :

चाहता गर प्यार नित ज़िन्दा रहे,
बाँधने की कर न कोशिश भूलकर।

: 188 :

गम न कर जो बन न पाया आफ्ताब,
बन गया जुगनू तो बाजी जीत ली।

: 189 :

पैर में जितने अधिक कांटे चुभे,
पारखी गुल के वही उतने हुए।

: 190 :

फेर कर मुँह जो गया है आफ्ताब,
मुँह दिखाने खुद वही कल आयगा।

: 191 :

जो कहानी की समन्दर ने शुरू,
खत्म भी आखिर उसी ने की उसे।

: 192 :

जो करे वह कर लगन से इस तरह,
हर जुबां पर नाम आये फक्र से।

: 193 :

हो नहीं सकती उसे जन्नत नसीब,
चल रहा रख आदमी से दूरियाँ।

: 194 :

गर इनायत चाहिए तुझको खुदा की,
आदमी की कर इबादत वह मिलेगी।

: 195 :

प्यार दुनिया से वही कर पायेगा,
आ गया जिसको स्वयं से प्यार करना।

: 196 :

राह दुनिया को दिखाना बाद मे,
खुद जरा चलकर के पहले देख ले।

: 197 :

चाह जिसकी है वही मिल जायगा,
जिन्दगी का राज पहले जान ले।

: 198 :

क्या दिखाये रास्ता संसार को,
जो कि खुद भटका हुआ है राह से।

: 199 :

है नहीं औकात दुनिया की छले,
छल रही हमको स्वयं की ही नजर।

: 200 :

दूसरों को दोष मत देना कभी,
भूल से खुद की सदा ठोकर लगी।

: 201 :

ऑख की गर पॉव से है दोस्ती,
फिर नहीं ठोकर लगेगी राह में।

: 202 :

रोशनी की है जहॉ अठखेलियॉ,
नाच करता है अॅधेरा भी वहॉ।

: 203 :

निभ सकेगी दोस्ती बस एक से ही,
हो भले वह रोशनी चाहे अॅधेरा।

: 204 :

रास्ता खुद खोज लेगी रोशनी दिल की,
स्याह कितनी ही भले हो रात, क्या चिन्ता।

: 205 :

पहुँच मंज़िल पर गये पहले बहुत होते,
उलझती नजरे न दुनिया के नज़ारों में।

: 206 :

सुन सभी की जो सुनाना चाहते,
अनसुनी चाहे रहे तेरी पुकार।

: 207 :

हो भले साहिल भले मझधार हो,
हर समय हो चेहरा तेरा खिला।

: 208 :

पहुँच मजिल पर, पहुँच कुछ इस तरह,
हो नयी वह कामयाबी की मिसाल।

: 209 :

हो नहीं पाते कभी जो कामयाब,
वे लिया करते बहानों का सहारा।

: 210 :

बात सुनता कौन है नाकामियो की?
कामयाबी की कहानी गूंजती है।

: 211 :

चाह पूरी हों सभी सम्भव नहीं,
छोड़ मत हिम्मत किसी भी हाल में।

: 212 :

दूर कितनी दूर मजिल हो भले,
जो चलेगा वह पहुँच ही जायगा।

: 213 :

चल न पाते वक्त के जो साथ मे,
कोसते ही वक्त बीते जिन्दगी।

: 214 :

बन मसीहा दिल मे है बसते वही,
रास्ता अपना बनाकर जो चले।

: 215 :

हारते है जो अंधेरो से नहीं,
देख पाते सिर्फ वे उजला सबेरा।

: 216 :

सिर्फ खुशियों के सदा नगमें रहे,
बात गम की होठ पर आये नहीं।

: 217 :

खुद भँवर में कश्तियाँ जो छोड़ते,
देख तेवर मौज़ के आती हँसी।

: 218 :

जो मिला पल जी उसे भरपूर जी,
क्या भरोसा दूसरे पल का यहाँ।

: 219 :

यूँ न नुक्ताचीनियाँ सुनकर बहा आँसू,
कौन जिसका सामना इनसे नहीं होता?

: 220 :

फ़िर नहीं छूती निराशा है कभी,
जान ले गर आदमी अपना वजूद।

: 221 :

खूबियां तब्दील कर लेती है तिल मे ताड़ को,
ताड़ तिलको मान थर्राती सदा कमजोरियां।

: 222 :

जिन्दगी की हर हकीकत से हैं सब वाकिफ़,
खुद के मसले पर मगर वे भूल जाते हैं।

: 223 :

जी रहा है आदमी धरकर अनेकों रूप,
जो लगे प्यारा उसी मे देख ले उसको।

: 224 :

दूसरों के देखना जब छोड़कर मेरी गयी
दाग पर अपने नजर तो शर्म से सर झुक गया।

: 225 :

जिन्दगी जन्नत से बढकर हो गयी,
टिक गयी खुद पर किसी की जब नज़र।

: 226 :

कौन किसको दे रहा क्या, ले रहा क्या,
जिन्दगी भर यह पता चलता नहीं है।

: 227 :

दे सभी को दे सके जितना,
सोचना मत बात लेने की।

: 228 :

साफ रखते जिन्दगी का जो हिसाब,
गुनगुनाते इस जहॉ को छोडते।

: 229 :

ले सपन औकात अपनी देखकर,
टूटने का डर नहीं होगा कभी।

: 230 :

बात ही करता न रह मायूस हो,
कर सके जितना अँधेरा दूर कर।

: 231 :

मिल सभी से प्यार से जो राह में मिलते,
बन सभी की ऑख का फिर नूर चमकेगा।

: 232 :

कब रुकी दुनिया किसी के वास्ते,
जो गये उनको भुलाकर चल रही।

: 233 :

देखता रह हर नज़ारा मौज़ से,
देखने में फिर नहीं यह आयगा।

: 234 :

जोर जिस पर है नहीं उस बात को,
गम न कर, साहस जुटा स्वीकार ले।

: 235 :

एक मै ही ठीक बाकी सब गलत,
सोचकर खुद के लिए कांटे न बो।

: 236 :

कोस मत अब बैठकर तकदीर को,
जो मिला खुद के कदम से है मिला।

: 237 :

ज़िन्दगी इसको नहीं कहते,
चेहरा उतरा, नज़र मायूस।

: 238 :

देख धीरज से मिले जो देखने,
जो दिखाता रख सदा उस पर भरोसा।

: 239 :

आदमी गर तो मिटा हर हाल में,
आदमी से आदमी की दूरियाँ।

: 240 :

जो भी करता वह किसी मकसद से है,
है तेरा मकसद जो पूरा कर उसे।

: 241 :

काम से हर काम को अज़ाम दे,
काम रोने से नहीं बनता कभी।

: 242 :

महल को ही देखता क्या रात-दिन,
जिन्दगी फुटपाथ पर भी है यहाँ।

: 243 :

लोग कुछ रोते चुभे कांटा अगर,
घाव खाकर भी कई मुसका रहे।

: 244 :

वे भला क्या भोर की कीमत करेंगे,
हैं नहीं गुजरे अंधेरे स्याह से जो।

: 245 :

देखते हो जो नज़ारा आज तुम,
कल चले थे खुद इसी को देखने।

: 246 :

रुक न जाये ज़िन्दगी का कारवां,
हो भले तूफ़ान या ठण्डी हवा।

: 247 :

गुल मुहब्बत का खिला है तब तलक,
जब तलक शक की नज़र पड़ती नहीं।

: 248 :

आदमी से आदमी मिलता है जब,
ज़िन्दगी का रूप जाता है सँवर।

: 249 :

रूप अपना देखते जो आज तुम,
है तुम्हारे हाथ से ही वह बना।

: 250 :

दूसरों को वे न समझाने चलेंगे,
जान लेंगे ज़िन्दगी का राज़ जो।

: 251 :

बात करते जो कभी थकते न थे,
बात करना भी गवारा अब नहीं।

: 252 :

कर दुआ पूरे हुए हैं जिस तरह
सपन तेरे, दूसरो के हों सभी।

: 253 :

दे रहा कोई कहीं, है ले रहा,
कर्ज़ का ही खेल सारा देखते।

: 254 :

ज़िन्दगी की हर अदा से जो हुए वाकिफ,
हौसला हर हाल में कायम रहा उनका।

: 255 :

आदमी उसको भला कैसे कहोगे,
कद्र जो करता नहीं है आदमी की?

: 256 :

गर मुहब्बत का नहीं सीखा सबक,
ज़िन्दगी वह काम की कोई नहीं।

: 257 :

उठ नहीं सकता नज़र में आदमी,
सिमट आया सोच जिसका खुद तलक।

: 258 :

खोज में जिस चैन की है रात-दिन,
वह मिलेगा भीड़ से होकर अलग।

: 259 :

फिर न कोई गम रहेगा ज़िन्दगी में,
भीड़ मे रह भीड़ से होकर अलग।

: 260 :

जब मिलेगा दिल से दिल मिल जायेगा,
हाथ की माला सकी दे चैन किसको।

: 261 :

चाहते हो गर किसी को बांधना,
बाध पाओगे मुहब्बत से फकत।

: 262 :

फिर शिकायत भूल से होगी नहीं,
देख दुनिया को उसी के रूप में।

: 263 :

बदल न पायेगा दुनिया को किसी तरह,
अपने को ले बदल मज़ा आ जायेगा।

: 264 :

उसको ही गले लगाती है दुनिया,
जो नाच रहा उसके हरएक इशारे पर।

: 265 :

है अगर तमन्ना लोग लगाये गले तुझे,
तू उनकी सभी तमन्नाओ को गले लगा।

: 266 :

खुद मे पैदा जो न कर पाये खुशी,
बेमज़ा गुजरेगी उनकी ज़िन्दगी।

: 267 :

पहुँच मंजिल पे सकेगे वे कदम,
रास्ते के राज से वाकिफ हुए।

: 268 :

वे नहीं मायूस होते है कभी,
वक्त के उपहार को स्वीकारते।

: 269 :

काम का खुद के न दुनिया का,
हो गया ईमान से महरूम।

: 270 :

देख मत पीछे न आगे देख,
रख नजर अपने कदम के साथ।

: 271 :

जिस्म पाकर आदमी का भी रहे रोता,
कौनसा वह जिस्म पाकर मुसकरायेगा?

: 272 :

वह नजारा हो नज़र के सामने,
जो कदम को रोक ले भटकाव से।

: 273 :

हो नहीं तकरार उनसे भूलकर,
साथ जिनका जिन्दगी भर के लिए।

: 274 :

पड़ रहा हर काम का जिस पर असर,
वह तेरा सबसे करीबी याद रख।

: 275 :

जब तलक खुद को छलेगा आदमी,
चैन से कोसों रहेगा दूर वह।

: 276 :

प्यास से होगा वही आजाद,
सीख लेगा प्यास से लड़ना!

: 277 :

गर नहीं इंसान मे इंसानियत,
रूप में इंसान के हैवान है।

: 278 :

लहर पानी मे बहुत बेचैन है,
चैन पा लेगी किनारे पहुँचकर।

: 279 :

गम नहीं कोई हमेशा टिक सके,
असर कम होता रहेगा दिन-ब-दिन।

: 280 :

आदमी कमजोर केवल इसलिए,
काबलीयत का नहीं खुद की पता।

: 281 :

जो रुलाता ही रहे संसार को,
आदमी उसको न कहना चाहिए।

: 282 :

जो मुहब्बत की जगाता अलख है,
है फरिश्ता आदमी के रूप में।

: 283 :

किस चमन मे है खिला मत सोच यह,
देखता रह प्यार से हर फूल को।

: 284 :

की मुहब्बत जिससे दो पल के लिए,
भूल से भी बात नफरत की न हो।

: 285 :

महर से जिसकी रहे कायम वजूद,
उसके सिजदे में हमेशा सर रहे।

: 286 :

मेहरबानी से हुआ जिसकी बड़ा काबिल,
काबलीयत से उसे खुशहाल करता चल।

: 287 :

है शमा का काम जलकर रोशनी देना,
मत लगा तोहमत जो परवाने जले।

: 288 :

हाथ बढ़ते जो सहारे के लिए,
हाथ से उनको सहारा दे सदा।

: 289 :

उम्र होती थामकर अंगुली चलें,
उम्र होती है थमायें अंगुलियां।

: 290 :

हो जरूरत आदमी अच्छा बहुत,
गर नहीं तो काम का कुछ भी नहीं।

: 291 :

है मुसाफिर सोच यह हर काम कर,
चैन दिल का साथ छोड़ेगा नहीं।

: 292 :

समझकर इस सांच को खुश रह सदा,
फिर उगेगा ढल रहा जो आफताब।

: 293 :

जब नहीं मुमकिन कि खुद को जान पाये हम,
दूसरों को जानने का है गलत दावा!

: 294 :

सोचते हैं लोग जो भी सोचने दे,
है नहीं मुमकिन सफाई मान लेंगे।

: 295 :

झूठ से मिटता नहीं सच का वजूद,
बादलो को चीर चमके आफताब।

: 296 :

जो तुझे अच्छा लगे वह कर भले,
दूसरों को भी यही अधिकार दे।

: 297 :

बदल सकता गर नहीं कोई नज़ारा,
गम न कर ले बदल अपनी ही नज़र तू।

: 298 :

फँस गयी जो नज़र दुनिया के नज़रों में,
खुद की मंज़िल का न मंज़र देख पायेगी।

: 299 :

साथ चलता वक्त के हर हाल में,
वह शिकायत वक्त की करता नहीं।

: 300 :

जो लगे अच्छा वही लगता बुरा,
खेलता है वक्त सारा खेल यह।

: 301 :

कश्ती मोज़ों से रहे जो खेलती,
हलक होती है उन्हीं के हाथ से।

: 302 :

मांग जो करते रहे नित मौत की,
देखकर उसको पसीना आ गया।

: 303 :

जो गुजरती ज़िन्दगी रोते हुए,
है नहीं करता उसे कोई सलाम।

: 304 :

भेद करती जो नज़र, उलझी हुई,
सुलझ जाती भेद वह करती नहीं।

: 305 :

पैर में कांटे सभी के चुभ रहे,
पर असर होता नहीं है एकसा!

: 306 :

झोलियाँ फैली हुई हैं भीख के खातिर,
मिल रहा उतना कि जो हकदार है जितना।

: 307 :

छू न पाता है जिसे कोई नज़ारा,
या तो पत्थर या कि वह भगवान् है।

: 308 :

पहुँच मंज़िल पे सके हैं वे कदम,
वक्त के जो साथ हैं चलते रहे।

: 309 :

नाव उनकी ही किनारे पर लगी,
जो चले हैं रुख हवा का देखकर।

: 310 :

नाम उनके ही तवारिख में जुड़े,
हौसला कायम रहा हर हाल में।

: 311 :

वे हुए हैं ज़िन्दगी में कामयाब,
नज़र मंज़िल से न पल भर भी हटी।

: 312 :

नाम उनके किस जुबां पर हैं चढे,
जो जिए खुद के लिए संसार में।

: 313 :

खेल कितने ही दिखा चाहे,
अब शिकायत कुछ नहीं होगी।

: 314 :

यह खिलाड़ी खेलता हर खेल,
आ गया अब यह समझ में राज़।

: 315 :

बिछुड़ जाये वह नहीं अपना,
गीत रहता जिन्दगी भर साथ।

: 316 :

जो तुम्हारे न्याय से वाकिफ,
वे शिकायत कुछ नहीं करते।

: 317 :

जब हुआ है तू किसी पे मेहरबां,
प्यार में अपने किया पागल उसे।

: 318 :

उफ् कभी भी निकल पाती है नहीं,
नाम तेरा जिस जुबां पर आ गया।

: 319 :

सोचता कुछ भी नहीं उसके लिए,
कर रहे हो जो वही बस ठीक है।

: 320 :

आँख में सबके नमी संसार में,
दर्द हर दिल का भले ही हो जुदा।

: 321 :

आदमी को है रुलाते आदमी अपने,
समय के हाथों समय की हार होती है।

: 322 :

गैर की चिन्ता रहेगी जब तलक,
सोच पायेगा न खुद के वास्ते।

: 323 :

आंक पाती जो नहीं है प्यार की कीमत,
जिन्दगी वह चैन से महरूम रहती है।

: 324 :

जिन्दगी उनकी अधूरी रह गयी,
सामना जिनका नहीं गम से हुआ।

: 325 :

रूह की होती मुहब्बत रूह से जब,
चेहरे पर जिन्दगी के नूर आ जाता।

: 326 :

आदमी नफरत कभी पैदा नहीं करते,
बोलते जब बोलते हैं प्यार के ही बोल।

: 327 :

जुड़ गये हर शख्स से वे लोग,
डूबकर खुद में रहे दिन-रात।

: 328 :

दिल को जब आगोश में लेता अधेरा,
तब दिलासा दूर की भी रोशनी देती।

: 329 :

मुसकराते लोग तो तोहमत लगा,
बेगुनाह उसकी सजा है भोगते।

: 330 :

थी मिलायी नज़र था वह भोर का,
सोचना मत यह दुपहरी आफ्ताब।

: 331 :

मन्नतें करना हमारे हाथ,
मानना तो हाथ है उनके।

: 332 :

सोचना मत भूल जाऊँगा तुम्हें,
जिन्दगी भर मैं करूंगा इन्तजार।

: 333 :

है यही इच्छा तुम्हारा नाम ही
हो जुबां पर जब यहाँ से कूच हो।

: 334 :

ज़िस्म में ही उलझ जाती जो नज़र,
रूह से सम्बन्ध जुड़ता है नहीं।

: 335 :

कुछ बदलता है न दुनिया में,
बदलती है बस नज़र खुद की।

: 336 :

ज़िस्म से है प्यार का बस यह सबब,
रूह ने इसका लिया है आसरा।

: 337 :

जो बनाता जा रहा तस्वीर वह,
है नहीं पूरी अभी तक हो सकी।

: 338 :

दर्द का मारा हुआ हर शख्स है,
सबब सबका एक ही पर है नहीं।

: 339 :

इस गुजरते वक्त के ही साथ में,
प्यार का होता रहेगा इम्तिहान।

: 340 :

है अभी नफरत तो ऐसा मान चल,
था कभी दिल में मुहब्बत का जुनून।

: 341 :

हो सदा ही एक दिल से यह दुआ,
हर नज़र का ख्वाब पूरा हो सके।

: 342 :

ज़िन्दगी को जो जुदाई से मिले,
मिलन से होता बहुत ही कीमती।

: 343 :

बात दिल की ही रहे सुनते अगर,
ज़िन्दगी नासूर बन रह जायगी।

: 344 :

हैं बहुत बुत और बुतखाने बहुत,
जलन दिल की है मिटा पाते नहीं।

: 345 :

बहल जाता दिल अगर तेरे सिवा,
गिड़गिड़ाते इस कदर आकर नहीं।

: 346 :

एक ही पर टिक रही है जो नजर,
प्यार का वरदान उसको ही मिला।

: 347 :

कब नहीं थे लोग अच्छे या बुरे,
दोष नाहक वक्त को है दे रहा।

: 348 :

सो नहीं पाते बहुत से लोग है,
किन्तु कारण एक ही होता नहीं।

: 349 :

याद आकर जो रुलाती है हमें,
ज़िन्दगी का है सहारा भी वही।

: 350 :

मिल रहे पैगाम उनके हर घड़ी,
दूरियों का भी बडा अहसान है।

: 351 :

जिन्दगी मे प्यार कितना कीमती,
समझ पाते दूर होकर ही इसे।

: 352 :

बस गया दिल मे नहीं वह दूर होगा,
कर भले कितने जतन यह देख लें हम।

: 353 :

हो भले दुनिया की दौलत पास मे,
है नहीं गर प्यार कीमत कुछ नहीं।

: 354 :

जान पाते है न जिसको उम्र भर,
एक पल में जान लेते हैं कमी।

: 355 :

आदमी के जान ले बाबत यही,
कीमती होते सभी अपनी जगह।

: 356 :

प्यार हर इसान से है गर नहीं,
प्यार करने की नहीं आयी कला।

: 357 :

याद रखना घर वही गुलजार होता है,
एक दूजे से परस्पर प्यार होता है।

: 358 :

याद में तेरी गुजरती जिन्दगी,
याद करते ही यहाँ से कूच हो।

: 359 :

सब सुनाने के लिए बेचैन हैं,
हैं नहीं तैयार सुनने के लिए।

: 360 :

पास में दौलत जहाँ की हो भले,
है नहीं गर चैन कीमत कुछ नहीं।

: 361 :

है जरूरी बात करने का शऊर,
ज़िन्दगी बनती-बिगड़ती बात से।

: 362 :

कर रहा मालिक यही इक आरज़ू,
जो रज़ा तेरी वही मेरी बने।

: 363 :

एक दिन अपना बनायेंगे जरूर,
इस भरोसे हैं पड़े दर आपके।

: 364 :

दिल में पैदा गर मुहब्बत हो गयी,
बहुत ही प्यारा लगेगा यह जहाँ।

: 365 :

है हुई शुरुआत अच्छी, ठीक है,
अंत ऐसा हो जतन कर रात-दिन।

: 366 :

खूबसूरत चेहरा काफी नहीं,
खूबसूरत दिल भी होना चाहिए।

: 367 :

दोस्त! तेरी दोस्ती से जो मिला,
है बहुत वह इस सफर के वास्ते।

: 368 :

छूट दी जिसको अभी तक साथ चलता है,
हो गया वह दूर जिसको बांधना चाहा।

: 369 :

ख्वाब तुममें ही हुआ साकार है मेरा,
जलन दिल की तुम न मिलते तो नहीं मिटती।

: 370 :

था बनाया जतन से जिस आशियां को,
ठीक होगा क्या उसे खुद ही मिटाना?

: 371 :

रास्ते में जो रुकावट आ रही,
आजमाना चाहती तेरा वजूद।

: 372 :

भटक रहबर ही गया तो भटक जायेगा
कारवा जो चल रहा रखकर भरोसा!

: 373 :

है जिन्हे अपना लिया है एक बार,
दूर करने की कभी मन में नहीं आये।

: 374 :

हैं अगर कमजोर तेरे हमसफर,
फर्ज तेरा साथ मे लेकर चले।

: 375 :

कर रहे है लोग जो नादानियॉं,
प्यार से ही सदा समझा उन्हें।

: 376 :

एक जैसा वक्त कब किसका रहा,
हौसला रखना सदा हर हाल में।

: 377 :

दें सभी को दे सकें जितना जरूर,
रब ने भेजा है हमे बस इसलिए।

: 378 :

ज़िन्दगी का रास्ता जो है पुराना,
दास्तां तेरी सुनायेगा नहीं।

: 379 :

वह जुदाई क्या रहे जो आँख में आँसू,
मिल गले हँसते हुए ही अलविदा कहना।

: 380 :

मौज के मानिन्द है यह ज़िन्दगी,
पहुँच साहिल पे कहेगी अलविदा।

: 381 :

है दिखाती ज़िन्दगी कितनी [illegible],
अखरती कोई, किसी पर है फिदा।

: 382 :

आँख का बन नूर रहते हैं कभी जिनके,
एक दिन आँखें चुराते नज़र आते हैं।

: 383 :

गुल मिला गर खाक में कुछ गम न कर,
फिर नई ले शक्ल [illegible] यहीं।

: 384 :

साथ छूटे जब किसी का ज़िन्दगी,
खोज लेती है सहारा फिर यहीं।

: 385 :

खो दिया उसके लिए मैं [illegible] को मत कोसा,
जो मिला उसमें इसी की मेहरबानी थी।

: 386 :

एक दिन फरियाद सुन ली जायगी,
रख भरोसा वह खड़ा हर हाल में।

: 387 :

आदमी खुद को समझ लेता है जब,
राज़ दुनिया का न कोई राज़ रहता।

: 388 :

कर न चिन्ता था कहाँ कल, कल कहां होगा,
आज के हालात पर ही रख नज़र अपनी।

: 389 :

है नहीं तू जिस्म रखना याद यह,
रूह है ऐसा समझ हर काम कर।

: 390 :

कौन है तू, कौन है अपना यहाँ,
सोचकर यह हर कदम आगे बढा।

: 391 :

डगमगाये कदम करना याद उनको,
हर कदम पर जो मुसीबत से लड़े।

: 392 :

बेड़ियाँ सम्बन्ध की गर बन गयीं तो,
राह पर इसाफ की ना चल सकेगा।

: 393 :

एक भी गर काम गफलत मे हुआ,
चैन दिल का छीन लेगा वह जरूर।

: 394 :

हर कदम ईमान के गर साथ है,
मदद मे रब की कमी होगी नहीं।

: 395 :

जब कभी दिल मे निराशा घर करे,
रब पे टिक जाये नजर विश्वास से।

: 396 :

हैं नज़ारे काम के कुछ भी नहीं,
रोशनी से आँख गर महरूम है।

: 397 :

सोच मत है मौज यह इठला रही,
है बहुत बेचैन साहिल के लिए।

: 398 :

वक्त जो भी दे उसे ले सर झुका,
खूबसूरत ज़िन्दगी हो जायगी।

: 399 :

ले रहा सौगात जो बेमन से तू,
बहुत ही मन से तुझे रब दे रहा।

: 400 :

मन की तेरे हो रहीं बातें बहुत,
कुछ अगर हो जायें रब की क्या बुरा?

: 401 :

बदलते कब रास्ते, कब आदमी?
आदमी का सोच ही जाता बदल।

: 402 :

बदल सकते है नहीं तकदीर को,
है मदद करना हमारे हाथ मे।

. 403 :

दर्द दिल का जब नहीं होता सहन,
ढूँढने दिलबर निकलती ज़िन्दगी।

: 404 :

ठोकरो का सिर्फ है इतना सबब,
शख़्शीयत की परख हो अच्छी तरह।

: 405 :

हाथ जो देकर सहारा है बढाते,
खैंचते देखा कभी पीछे उन्हीं को।

: 406 :

देखने में ही मगन मेला रहा,
हाथ आयेगा नहीं कुछ, सोचले।

: 407 :

उठ रहा मेला ले जल्दी से खरीद,
चाह ले जिसकी यहॉ आना हुआ।

: 408 :

गर नहीं कुछ पास देने के लिए,
मिल सकेगा कुछ नहीं यह याद रख।

: 409 :

पार करना है अगर दरिया तुझे,
तैरकर जा या सहारा खोज ले।

: 410 :

भटकते है लोग केवल इसलिए,
रास्ते का है नहीं उनको पता।

: 411 :

तब खिलेंगे फूल तेरे हर तरफ,
आस दुनिया से रहेगी कुछ नहीं।

: 412 :

जो बिछाते ऑख रहते है कभी,
वक्त आता है दिखाते ऑख वे।

: 413 :

बात करते जो नहीं थकते अभी,
बात करने की नहीं फुर्सत रहे।

: 414 :

बदलते देखा अगर तुमने,
वह नहीं था प्यार का रिश्ता।

: 415 :

अनसुनी चाहे रहें याकी पुकार,
प्यार की आवाज जाती है सुनी।

: 416 :

जीत पाते हैं वही संसार को,
पास में हथियार जिनके प्यार का।

: 417 :

हो नहीं सकतीं उन्हें खुशियाँ नसीब,
दिल किसी का हैं दुखाते हर घड़ी।

: 418 :

दिल कहीं बिकते नहीं बाजार में,
दे सकें जो दिल वही दिल पा सकें।

: 419 :

बंदगी का सिर्फ वह हकदार है,
इक नज़र से जो सभी को देखता।

: 420 :

प्यार के ही लब्ज हैं जो बोलते,
हैं फरिश्ते आदमी की शक्ल में।

: 421 :

दायरे ही खैचता हरदम रहा,
बेसहारा आज केवल इसलिए।

: 422 :

बात मन की हो, नहीं हो, हर समय,
मौज में आये नहीं कोई कमी।

: 423 :

है जहाँ जिसकी नजर में आज तू,
कल वहाँ होगा जरूरी है नहीं।

: 424 :

इस जहाँ मे चन्द ही हैं लोग वे,
ज़िन्दगी के मायने जो जानते।

: 425 :

एक पल मे जो मिला है आपसे,
दे नहीं पाया जमाना आज तक।

: 426 :

गर सके ना जोड़ कुछ चिन्ता नहीं,
तोड़ना मत दिल किसी का भूलकर।

: 427 :

दिल ने अब तक थे किये जितने सवाल,
जिन्दगी ने दे दिये उनके जवाब।

: 428 :

एक सी ही कब किसे अच्छी लगे,
हर समय की बात होती है अलग।

: 429 :

है इरादे बहुत से इंसान के,
बदल देती हैं जिन्हें मजबूरियाँ।

: 430 :

जो उलझकर ज़िस्म में ही रह गयी,
नजर में उठने न पायी वह नज़र।

: 431 :

और पुख्ता जुल्म से होगे इरादे,
इन्तहा ना हो सकेगी सब्र की।

: 432 :

बदइरादो से मिला किसको शकून,
चैन मिलता जो इरादे नेक हो।

: 433 :

जिन्दगी वीरान उनकी हो गयी,
जो मुहब्बत के नहीं जानिब हुए।

: 434 :

बिक रहा ईमान, बिकते है उसूल,
बेचने तैयार सब कुछ आदमी।

: 435 :

बदगुमानी इस कदर हावी हुई,
खुदकुशी को आदमी तैयार है।

: 436 :

बात करने का नहीं जिनको शुऊर,
नासिहा वे बन गये हैं कौम के।

: 437 :

लफ्ज में ढलते ही मिट जाता वजूद,
हैं रहे कायम सदा वादाये-दिल।

: 438 :

आगया होता समझ में आपका गर सोच,
मुल्क को बेहाल होने से बचा लेते।

: 439 :

बात से है बात निकले इस तरह हरदम,
आपका मकसद समझ में कुछ नहीं आता।

: 440 :

साथ में हैं आज जायेंगे बिछुड कल,
दिल नहीं तैयार सच यह मानने को।

: 441 :

एक ऐसा मिल बनाये आशियाना,
गम-खुशी मे हाथ सब मिलकर बँटायें।

442 :

वक्त जो दे ले उसी मे ही मज़ा,
बदल पायेगा नहीं सौगात वह।

: 443 :

बस, तमन्ना एक ही दिल में रहे,
हों नहीं मोहताज दुनिया के कभी।

· 444 :

देखना तुमको गवारा है नहीं,
देखने मेला लगे उसको यहाँ।

: 445 :

प्यार का रिश्ता रहा जिनसे कभी,
है तुले बदनाम करने आज वो।

: 446 :

कीमती हीरा बहुत तो क्या हुआ,
पारखी गर है नहीं, बेकार है।

: 447 :

जिस नजर से मोल अपना आंकते,
मोल लोगो की नजर में वह नहीं।

: 448 :

लोग सुनते है उसी आवाज़ को,
दिल करे मजबूर सुनने के लिए।

: 449 :

साथ जो अपनी तसल्ली के लिए,
छोड़ देगे जब मिलेगी यह नहीं।

: 450 :

ज़िन्दगी लगती हसीं है प्यार से,
गर नहीं हो बोझ यह लगने लगे।

: 451 :

दे रहा आवाज़ हो मजबूर कोई,
अनसुनी करने कोई मजबूर है।

: 452 :

मानते हैं प्यार है मरता नहीं,
मौत से बदतर हुआ मजबूर जो।

: 453 :

राह तो अनजान ही रहती सदा,
जान लेता राज़ इस पर जो चले।

: 454 :

है अगर जीना तुझे हर हाल मे,
मुसकरा के जी न यूँ आँसू बहा।

: 455 :

साथ होगा राह में जिनका यहाँ,
राह में ही वे बिछुड़ते जायँगे।

: 456 :

राह से कांटा हटा दे जो चुभे,
आ रहे पीछे बचेंगे दर्द से।

: 457 :

शक्ल तो है हर जुदा इंसान की,
पर तमन्नाएँ सभी की एक-सी!

: 458 :

लोग जो कहते बड़ा तो फूल मत,
तू नहीं उनकी ज़रूरत है यहीं।

: 459 :

जो गये दिन, रो नहीं उनके लिए,
आ रहे उनको गले अपने लगा।

: 460 :

जो न मुमकिन हो न गम उनके लिए,
कर वही जो पूर्ण तुझसे हो सके।

: 461 :

गर नजर में एक ही होगा नजारा,
जिन्दगी यह बेमजा लगने लगेगी।

: 462 :

जो खुशी है दे रही बस, ठीक है,
गम जो देगा कीमती होगा बहुत!

: 463 :

जो मिला तुझको सबब उसका यही,
काम आये हर जरूरतमद के।

: 464 :

दूसरे का गम जिसे छूता नहीं,
नाम पर इंसान के वह दाग है।

: 465 :

जिन्दगी का ले मजा, पर इस तरह,
बन न पाये दूसरे का गम कभी।

: 466 :

मौज उसकी ही रहे कायम सदा,
दूसरों की चाह से आजाद हो।

: 467 :

ग़म न कर जो खाक में गुल मिल गया,
हर जुबां से हो रही खुशबू बयां।

: 468 :

पार करना है अगर दरिया तुझे,
देख तेवर लहर के मत खौफ खा।

: 469 :

जिसके साये मे पली यह जिन्दगी,
भूल मत जाना कभी अहसान उसका!

: 470 :

तीर से चुभते कलेजे मे कभी,
बोल, ठंडक भी पुगाते हैं वही।

: 471 :

धूप आगन में अभी गर है खिली,
पग पसारेगा वहाँ साया जरूर।

: 472 :

रूप का जादू हुआ जिस चाँद के,
चार दिन के बाद था वैसा नहीं।

: 473 :

चाहता तुझ पर नहीं दुनिया हँसे,
गम जुबां पर भूलकर आये नहीं।

: 474 :

भीख तो हर द्वार से मिलती यहाँ,
झोलियों को देखकर मिलती मगर।

: 475 :

लग रहा तुझको कठिन जो रास्ता,
लोग लाखों हैं गये उससे गुजर!

: 476 :

है बसी मूरत तुम्हारे ख़्वाब में,
ख़्वाब मे उसके बसी है और ही।

: 477 :

सर उठाये जो अकड़ कर चल रहा,
कल उसे देखा कहीं झुकते हुए।

: 478 :

देखकर उसकी हँसी यह सोच मत,
है नहीं दिल में कहीं कोई कसक।

: 479 :

दर्द से दिल फट गया होता कभी का,
मुसकराने की कला आती नहीं गर।

: 480 :

रास्ता तो एक-सा सबके लिए,
है नज़र में भेद जो इस पर चलें।

: 481 :

सब तरह के लोग होते हर समय,
कोसते है वक्त को नादान ही।

: 482 :

एक जैसे ही नहीं हैं हमसफर,
जीत लेगा प्यार से सबको मगर।

: 483 :

कल लगे अच्छे, बुरे गर आज हैं,
है जरूरत का फकत इसका सबब!

: 484 :

बंदगी उनकी सदा होती रही,
राह पर अपनी चले हर हाल में।

: 485 :

कहकहों में है नहीं चलता पता,
ठोकरों में रूप. आता सामने।

: 486 :

हारकर बाजी न यूँ आँसू बहा,
खेल अगली बार जीतेगा जरूर।

: 487 :

जो बढ़ेगा चरण आँसू पोछने,
सर झुकायेगा जमाना याद कर।

: 488 :

कर न चिन्ता लोग गर चलते नहीं,
काम तेरा है दिखाना रास्ता।

: 489 :

कामना सम्मान की रहती जहाँ,
काम होता है नहीं सम्मान का।

: 490 :

सिसकता जिस दर्द से बेचैन हो,
एक भी घर है बचा उससे नहीं।

: 491 :

निकलती है बात जब दिल से कभी,
हो नहीं सकता रहे वह बेअसर।

: 492 :

प्यार जो करते कभी रोते नहीं,
मस्त हो इसके नशे में झूमते।

: 493 :

समझ जाते प्यार के जो मायने,
रास आते दायरे उनको नहीं।

: 494 :

इल्मका है सार आया समझ मे,
है सिवा तेरे नहीं कुछ भी यहाँ।

: 495 :

दिख रहे जो सब मुसाफिर है यहाँ,
कूच करना है सभी को एक दिन।

496 :

पास मे जितना अधिक असबाब है,
कष्ट उतना ही रहेगा सफर में।

: 497 :

दिल मे मूरत रब की आ जिस दिन बसे,
हर तरफ दिखने लगे उसकी झलक ही।

: 498 :

भूल जाता दूसरों के खोजना,
दाग पर टिक जाय गर अपने नजर।

: 499 :

जिस गली से गुजरते इतरा रहे,
राज उसका जानते अच्छी तरह।

: 500 :

देख जिसको फेरते मुँह, वह कभी
दूसरों को देख करता था यही।

: 501 :

है न इनका दोष, खूबी है नहीं,
बुत बने वैसे बनाये बुततराश!

: 502 :

वक्त का ही है करिश्मा साथ है,
वक्त बदलेगा कि जायेंगे बदल।

: 503 :

सरस करती डाल को जो रूत कभी,
सोख लेती रस वही है एक दिन।

: 504 :

रूप जैसा देखते थे कल तलक,
आज वैसा जिन्दगी का है नहीं।

: 505 :

वक्त के ही साथ जाती जो बदल,
ज़िन्दगी होती वही है कामयाब।

: 506 :

दूसरो की छोड़ खुद से जब करेगे,
ज़िन्दगी रौशन करेगी वह शिकायत।

: 507 :

हैं खिले जो फूल, बिखरे शूल गर,
वह नतीजा काम का तुझसे हुआ।

: 508 :

हाथ जिनको थाम चलती जिन्दगी,
उम्र के ही साथ जाते हैं बदल।

: 509 :

ज़िस्म पर काबू भले ही कर सके,
जुल्म से दिल जीत पाया कौन है?

: 510 :

है नहीं दिल एक भी ऐसा यहाँ,
गम-खुशी से जो अछूता रह सके।

: 511 :

मिल सकेंगे वे न पुस्तक मे सभी,
जिन्दगी को पढ मिलेंगे सब जवाब!

: 512 :

है नहीं ताकत किसी में बांध ले,
चाह से खुद की बँधा है आदमी।

: 513 :

जान पाते कब मुहब्बत का सबब,
चल रहा है खेल अपने आप ही।

: 514 :

एक से बढ एक जग में जहर है,
वहम से बढकर नहीं कोई यहाँ।

: 515 :

देख ले करके भले कितने जतन,
एक दिन तो सांच बोलेगी जरूर।

: 516 :

साथ कोई बाँध देता पैर में घुघरू,
और कोई पैर की बन बेड़ियाँ आता।

: 517 :

गीत होठों पर जगे संदेश पा कोई,
आँख में लाता नमी है दूसरा आकर।

: 518 :

नफरतो में घुट रही जो ज़िन्दगी,
प्यार के दो बोल होते कीमती।

: 519 :

दर्द का साया नहीं पड़ता, जहाँ होती,
बात दिल की होठ पर लाने की आजादी।

: 520 :

आँख से देता दिखायी दर्द कब दिल का,
देख पाओगे उसे दिल की नज़र से ही।

: 521 :

भूल पाते जो नहीं गुजरे जमाने को,
है नहीं जाता सँवारा आज है उनसे।

: 522 :

मिट नहीं सकता नसीहत से कभी,
दर्द के तो काम आयेगी दवा।

: 523 :

जो सहारा दे उसे ही थामते,
हाथ किसका है कहाँ हैं देखते।

: 524 :

देखने में भूल भी होती कभी,
आंख का देखा न होता सब सही।

: 525 :

मेल स्वर में हो भले है भेद गर दिल में,
तरसती ही वह रहेगी ज़िन्दगी सुख को।

: 526 :

छटपटाते प्राण हैं जब प्यास से,
देखते तासीर पानी की नहीं।

: 527 :

गम न कर सुन बात लोगों की कभी,
गौर से सुन बात दिल से उठ रही।

: 528 :

कौन किसको कब कहाँ है बाँध पाया,
जो जहाँ जब भी बँधा खुद ही बँधा।

: 529 :

टूट जाती हर तरह की बेड़ियाँ,
छूटने की चाह दिल में हो अगर।

: 530 :

दर्द मिलता दर्द से है जब कभी,
काम करता है दवा का दर्द भी।

: 531 :

हो भले ही प्यार, नफरत हो भले,
जिन्दगी भर एक से रहते नहीं।

: 532 :

दूसरो को जो बढा, पीछे रहें,
बंदगी के वे सही हकदार हैं।

: 533 :

जब तलक उम्मीद जिन्दा, तब तलक
आदमी के रुक नहीं सकते कदम।

: 534 :

दर्द पर अंकुश लगेगा जब कभी,
रूप आँसू का धरेगा हारकर।

: 535 :

जिन्दगी की प्यास का बदलाव ही,
हाथ का बदलाव करता जा रहा।

: 536 :

लालसा सुख की रही जिनको नहीं,
वे न जकडे दासता की बेड़ियों में।

: 537 :

गम नहीं केवल चरण को रोकता,
सबब बनती है खुशी भी देखते।

: 538 :

प्यार को उपहार देने के लिए,
प्यार ही सबसे बड़ा उपहार है।

: 539 :

समय का इक फूल होता कीमती,
बिन जरूरत हार भी बेकार है।

: 540 :

इस तरह तय ज़िन्दगी का हो सफर,
एक पल भी गम न दिल को छू सके।

: 541 :

झूमते हर पल खुशी मे वे रहे,
की नहीं नफरत किसी से भूलकर।

: 542 :

मौत को देते चुनौती जो रहे,
माँगते है भीख उसकी आज वो।

: 543 :

पास में दुनिया की दौलत हो भले,
खाक है इन्सानियत के सामने।

: 544 :

कर भले दुनिया को चाहे बेनकाब,
गर तुझे इसकी जरूरत है नहीं।

: 545 :

खूबियाँ आती नहीं तेरी नजर,
जो न होती राह में दुश्वारियाँ।

: 546 :

जो किया मजबूर दिल से हो किया,
फिर करेगा जो करायेगा वही।

: 547 :

चाँद की हर रात से गहरी मुहब्बत,
साथ किसके सोच मत कितना रहे यह।

: 548 :

हो अकेला या कि कोई साथ हो,
नजर मंजिल से न हट पाये कभी।

: 549 :

और कुछ चाहे भले ना बन सकें,
आदमी बनना हमारे हाथ में।

: 550 :

काम चलता था नहीं जिसके बिना,
काम का कोई नहीं है आज वह।

: 551 :

कर्ज है यह सास तेरी वक्त का,
एक दिन इसको चुकाना है जरूर।

: 552 :

है नहीं ताकत स्वयं जो चल सके,
दे सकेगा क्या सहारा और को।

: 553 :

आंसुओं ने जिस कहानी को लिखा,
कहकहों में वह उजागर हो रही।

: 554 :

रूप पर मत रीझ जाये जो बदल,
दूसरे का हो कि हो तेरा भले।

: 555 :

तोड़ पायेगा न जग से मुसकरा नाता,
एक भी ख़्वाहिश रही दिल में अगर तेरे।

: 556 :

छिप रहा सूरज, निकलता चाँद है,
साथ मे है देखना मुमकिन नहीं।

: 557 :

मान अपना कर मदद सबकी जरूर,
दिन न आये माँगना खुद को पड़े।

: 558 :

रह सकेगा एक ही के साथ तू,
वे भले हों दूसरे या खुद भले।

: 559 :

जो मिली छत सर छुपाने के लिए,
कीमती उससे नहीं है दूसरी।

: 560 :

पहुँच मंज़िल पर सभी पूजे गये,
देखता है कौन पहुँचे किस तरह।

: 561 :

जान ले औकात अपनी आदमी,
आस्मां को भी झुकाकर दे दिखा।

: 562 :

आज ही कर सोचता है जो रहा,
ज़िन्दगी में कल कभी आता नहीं।

: 563 :

मस्त होती ज़िन्दगी है उस घडी,
दिल से मिट जाते सभी है जब मलाल।

: 564 :

याद जितना कर रहा है जो गये,
लोग तुझको भी करेंगे इस तरह।

: 565 :

दे न दौलत, और भी कुछ दे न दुनिया को,
आरज़ू, औलाद को अच्छा बनाकर दे।

: 566 :

पहुँच थी जितनी किया ताकत लगा उसको,
गम न कर जो पहुँच से बाहर रहा तेरी।

: 567 :

दूसरों से चाह रखने का वही हकदार है,
दूसरों की चाह जिससे हो रही पूरी सदा।

: 568 :

बाद वर्षों के समझ आयी मुझे,
दो कदम भी चल न पाया हूँ अभी!

569 ·

पूछते है लोग दिल की बात अब,
जब सुनाने की रही ख्वाहिश नहीं।

: 570 :

एक ही जैसी न करता बात रह,
उम्र होती है अलग हर बात की।

· 571 :

जान लेते जिन्दगी का राज जो,
रास आतीं बेड़ियाँ उनको नहीं।

: 572 :

मोल जिसका हो गया है वक्त पर,
खूबसूरत दास्तां उसकी हुई।

: 573 :

बात दिल मे जो सुना हर शख्स को,
आज या कल वे सुनेगे ही जरूर।

: 574 :

जानते औकात अपनी लोग जो,
वे इशारो पर नहीं दिल के चलें।

